IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 24, Issue 10, Series. 9 (October. 2019) 10-13
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

महिला आंदोलनों का इतिहास:पर्वतीय राज्य उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में

डॉ० राजकुमारी भंडारी चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर
वी०श०के०चं,गवर्नमेंट (पीजी)कॉलेज
डाकपत्थर,विकासनगर, देहरादून

आवामी आंदोलन के अणुमात्र एकाधकारणों से पैदानहींहोते हैं,उसके पीछे सामाजिक सवालों का एक पूरा ताना-बाना खड़ा रहता है ,क्योंकि आंदोलन प्रारंभ होने के वस्तुगत आधार सदैव समाज के भीतर ही धीरे-धीरे पनपते रहते हैं।जनता के हितों पर जब भीकुठाराघात होता है , तब तब जनता आंदोलित होती।हालांकियह सत्ता के विरुद्धहै परंतु यह जन सामान्य में उत्साह एवं आशा जगाता है,जो लोकतंत्र का एक विशेष गुण है।

राष्ट्रीय परिपेक्ष में उत्तराखंड की महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों को भले ही महत्व न मिला हो, किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि स्वतंत्रता के पूर्व और पश्चात भी उत्तराखंडी महिला ने अपने सीमित दायरे और सामाजिक रूढ़िवादिताके बावजूद अपने समय की चुनौतियों का सफलता से मुकाबला किया तथा हर समस्या के समाधान के लिए अपनी लड़ाई स्वयंलड़कर विजय प्राप्त की।शोध की आवश्यकता अनुरूप एक दृष्टि उत्तराखंड में उपजेआंदोलनों एवं उसमें महिलाओं के नेतृत्व पर डाली जानी अवश्यंभावी हो जाती है।दरअसल इतिहास बताता है कि उत्तराखंड की नारी का सामाजिक आंदोलनों में विशेष योगदान रहा हैजिसका विवरण निम्न है।

उत्तराखंड की महिलाएं एवं स्वतंत्रता आंदोलन :अगर स्वतंत्रता संग्राम पर नजर दौड़ाई जाए तो पर्वती य नारी ने इस आंदोलन में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।सन 1930 के मार्च -अप्रैल माह में घटित दो घटनाओं,नमक सत्याग्रह एवं पेशावर कांड में गढ़वाली सैनिकों के विद्रोह की गढ़वालतथा कुमाऊं में तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। ब्रिटिश गढ़वाल में सरकार की नीतियों के विरुद्ध अनेक स्थानों पर जनसभाएं आयोजित की गई।इन घटनाओं ने शीघ्र ही इस पर्वतीय अंचल की महिलाओं को सामूहिक रूप से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलनकरने के लिए प्रेरित किया। 5 मई सन 1930 को अल्मोड़ा के नंदा देवी मंदिर के प्रांगण मेंपुरुषआंदोलनकारियों के साथबड़ी संख्या मेंमहिलाएं भी एकत्रित होकर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन करने लगी।इन महिला आंदोलनकारियों का नेतृत्व भागुलीदेवीएवंकुंथीदेवी ने किया था।

आंदोलनकारियोंने 25 मई 1930 को अल्मोड़ा नगरपालिका में राष्ट्रीय ध्वजफहरानेका निर्णयलिया गया,जिसे रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने गोरखा सैनिकों को तैनात किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा मोहनलाल जोशी तथा शांति लाल त्रिवेदी नामकदो आंदोलनकारियों पर हमले भी किए गए। ऐसे वक्त में बि शनी देवी शाह,दुर्गा देवीपंत,तुलसी देवी रावत,भक्ति देवी त्रिवेदी आदि के नेतृत्व में महिलाओं द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक बनाने के लिए संगठन बनाया गया। अल्मोड़ा में आंदोलनकारी महिलाओंकुंती देवी वर्मा , मंगला देवी, भागीरथी देवी, जीवंती देवी तथा रेवती देवी को मदद देने के लिए स्वयं बद्री दत्त पांडे, देवी दत्त पंत एवं उनके कुछ साथी आए थे।उनकी वीरता ने पूरे पहाड़ को प्रोत्साहित किया और अंततः इन महिलाओं ने झंडारोहणकरने में सफलता हासिल की।जनवरी 1931 में महिलाओं ने बागेश्वर में एक ऐतिहासिक सम्मेलन किया जिस में स्त्रियों के उत्थान,राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय सहयोग,ब्रिटिश सरकार की नीतियों के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने और विदेशी कपड़ों की होली जलाने की शपथ ली गई।

उत्तराखंडकी महिलाएंएवं चिपको आंदोलन: ठेकेदारी प्रणाली के तहत जनवरी 1974 में रैणी (चमोली गढ़वाल) जनपद के जंगल में 2451 पेड़ों की नीलामीकेलिएदेहरादून मेंबोली लगनी थी।पहाड़ों में इसका भारी विरोध हो रहा था।15 एवं 24 मार्च 1974 को जोशीमठ (चमोली गढ़वाल) में तथा 23 मार्च को गोपेश्वर में रैणीजंगल के कटान के विरुद्ध प्रदर्शन किए गए , परंतु ठेकेदार इन विरोधों के बावजूद मजदूरों को लेकर रैणी पहुंच गए। 26 मार्च की सुबह पुरुषों की अनुपस्थिति में जब मजदूरों को जंगल में जबरदस्ती घुसाकरकर वृक्षों को काटने की कोशिश की गई, तो साहसी गौरा देवी गांव की बत्ती देवी,महादेवी, भूसी देवी आदि 21 महिलाओं तथा कुछ बच्चों को लेकर जंगल की ओर चल पड़ी। गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाओं नेमजदूरों से विनती की,कि जब गांव के मर्दआजाए ,तभी कोई कार्यवाही करें।परंतु ठेकेदार और जंगलात के आदमी महिलाओं कोनिरीहसमझकर उन्हें डराने धमकाने परउतारू हो गए।और सरकारी काम मेंबाधा डालने पर गिरफ्तारी की धमकी देने लगे। परंतु साहसी गौरा देवी कहां डरने वाली थी। महिलाएं यह कहते हुए पेड़ों से चिपक गई कि **पेड़नहीं हम कटेंगे**।

महिलाओं के इस अहिंसक प्रतिकार का ठेकेदारों के पास कोई उत्तर नहींथा।तैश में आकर जब ठेकेदार के एक आदमी ने महिलाओं पर बंदूक निकाल कर तानी तो पहाड़ की भोली-भाली महिलाओं के भीतर छुपा रौद्ररूप प्रकट हो गया।स्थिति को बिगड़ते देख मजदूरों में भगदड़ मच गई। और मजदूर धीरे-धीरे जंगल से खिसकने लगे। गौरा देवी के साहस काही नतीजा थाकि उसके बाद उनके ही नेतृत्व में गांव की स्त्रियों ने वृक्षों की रक्षा के लिए कुल्हाड़ियांहाथ में थाम ली और साहसी गौरा देवी एवं अन्य महिलाओं ने चिपको पद्धति के माध्यम से पेड़ों से चिपक कर उनकी रक्षा की।पहाड़ की महिलाओं केइस साहस से परिपूर्ण अभूतपूर्व घटना ने विश्व में पर्यावरण चेतना के नवजागरण का सूत्रपात कर दिया।

उत्तराखंड की महिलाएंएवं मद्य निषेध आंदोलन : 1960 के दशक में गढ़वाल के पौड़ी,श्रीनगर , कोटद्वार,लैंसडौन तथाटिहरी जनपद में **टिंचरी**के नाम से तथा कुमाऊं में **कच्ची शराब** के नाम से शराब काविष फैलता जा रहा था। यहां का पुरुष वर्गनशे का आदी होता जा रहा था।तभी रेवती उनियाल नामक महिला इस सामाजिक बुराई **शराब** के विरुद्ध खड़ी हो गई। रेवती उनियाल ने हरिजन बस्तीधुनारखोलाश्रीनगर गढ़वाल में घर-घर जाकर शराबबंदी के लिए कार्य प्रारंभ कर दिया।रेवती उनियाल द्वारा स्थापित महिला संघ में देवेश्वरी खंडूरी,चांदनी काला,शकुंतला देवी तथा अनेक जागरूक महिलाएं भी सम्मिलितथीं।जिनकी मदनिषेध आंदोलन की सामाजिक पहल 1968 मैं जाजल (टिहरी) निवासी श्रीमती हेमा देवी ने आगे बढ़ाई।1968 में महिलाओं के बीच एक ऐसा नाम उभरा जिसने अपने क्षेत्र की महिलाओं को मदनिषेध आंदोलन में लामबंद किया एवं उसे बड़े ही जोर-शोर से चलाया।यहबेहद साहसी महिला आंदोलन के तहत पुलिस वालों तक को भी पीटने से पीछे नहीं हटी।70 वर्षीय इस सामाजिक कार्यकर्ता के नेतृत्व में मध्य निषेध आंदोलन लगभग 15 वर्षों तक चलता है।

1986 में '**नशा नहीं रोजगार दो**'नारों के साथ उत्तराखंड संघर्षवाहनी द्वारा प्रारंभ किए गए आंदोलन में भी महिलाओं ने शराब के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई थी।नशा नहीं रोजगार दो आंदोलन विरोध और प्रदर्शन की सीढ़ी चढ़ता हुआ अल्मोड़ा में शराब की नीलामी रुकवाने वाले एक स बल 'महिला शक्ति' के रूप में उभरकर सामने आया।शराबबंदी के लिएजबरदस्त विरोध कर महिलाओं ने अल्मोड़ा प्रशासन द्वारा 20 मार्च 1984 को, की जा रही शराब की नीलामी स्थगित करवाकर महिला शक्ति का अभूतपूर्व परिचय दिया।पी०ए०सी के कड़े प्रबंध के तहत 26-27 मार्च को शराब नीलामी कीतारीख तय की गई परंतु उसका भी भारी विरोध हुआ। जिसमें 15 महिलाएं गिरफ्तार हुई। आंदोलन का नेतृत्व कला कांडपाल कर रही थी।इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए नव जागरण समिति चंबा , टिहरी द्वारा 1940 में चंबा में ही मधनिषेध कार्यक्रम अपने आप में एकअद्भुत कार्यक्रम था। महिलाओं में शराब के खिलाफ ऐसी जागृति बनी किपहाड़ की महिलाएं अपने पिता,पति तथा पुत्रों तक के विरोध हीआवाज उठाने लगी थी। उत्तराखंड में मधनिषेध के खिलाफ महिलाओं का यह संघर्ष आज भी विधिवत जारी है।

उत्तराखंडकीमहिलाएं एवं मैती आंदोलन:मैती आंदोलन एक भावनात्मक आंदोलन है जो आज उत्तराखंड की महिलाओं के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो चुका है। **मैती**शब्द स्थानीय बोली मैतीसे लिया गया है जिसका अर्थ **मायका** होता है।इस आंदोलन के प्रणेता श्री कल्याण सिंह ने महिलाओं एवं पर्यावरण के बीच एक रचनात्मक एवं भावनात्मक रिश्ता बनाने का प्रयास किया है। इस संगठन का संचालन गांव की सभी अविवाहित महिलाएं मैतीनाम से करती हैं। वे इस संगठन के माध्यम से फल,चारा , ईंधन तथा जमीन के जल स्तर को बनाए रखने वालेवृक्षोंके पौधे तैयार करती हैं।मैती आंदोलन का भावनात्मक पक्ष यह है कि जब कोई लड़की किसी पौधे को अपने हाथों से रोपती है,तो उस पौधे से उसका भावनात्मक रिश्ता जुड़ जाता है। और शायद यही भाव उसे उस पौधे की देखभाल के लिए करने के लिए प्रेरित करता है।

ऋषि-मुनियों ने कहा है कि वृक्षारोपण करने वाले मनुष्य की इस लोक में कीर्ति बनी रहती है और देहांत होने के उपरांत उसे परलोक में उत्तम फल की प्राप्ति होती है। संसार में वृक्षारोपण करने वाले का नाम होता है और परलोक में उसका सम्मान पितृभी करते हैं।वैसे भी एक कहावत है कि 100 कपूतोंकोजन्म देने से बेहतर एक वृक्ष लगाना है,जो हमें जीवनदायिनी वायु तो देता है। संभवतः यही धारणा अविवाहित महिलाओं को वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करती है।मैतीआंदोलन की एकप्रथा है।जब भी संगठन से जुड़ी किसी महिला का विवाह होता है,तो जरूरी रसों के साथ मैतीबहने दूल्हा-दुल्हन को वृक्षारोपण स्थल तक ले जाती हैं , जहां दूल्हा एक पौधे को रोपता है एवं दुल्हन उस पौधेकोसींचतीहै। बाद में उस पौधे का संपूर्ण दायित्व मैतीबहनों को देकर दुल्हन विदाहो जाती है। विवाह की मधुर स्मृतियों को वृक्षारोपण के जरिए स्थाई बना देने और रचनात्मक सांस्कृतिक मुहिम चलाने वाला यह आंदोलन पर्यावरण को बचाने के लिएएक महत्वपूर्ण वरदान साबितहो रहा है।

उत्तराखंड की महिलाएं एवं विश्वविद्यालय आंदोलन :स्वामी मन्मथन उत्तराखंड विश्वविद्यालय आंदोलन के जनक थे।विश्वविद्यालय आंदोलन गढ़वाल का एक सशक्त एवं प्रभावपूर्ण आंदोलन था। जो अपनीव्यापक जन सहभागिता और तीखे तेवरों के लिए प्रसिद्ध है।इस आंदोलन का प्रारंभ सन 1971 में उत्तराखंड विश्वविद्यालय की मांग को लेकर हुआ।उस दौरान गढ़वाल तथा कुमाऊं के महाविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय एवं देहरादून के महाविद्यालय मेरठ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित होते थे।

उत्तराखंड में क्षेत्रीय जनताखासकर महिलाओं ने विश्वविद्यालय की मांग को लेकर अपना आंदोलन तीव्र कर दिया था।परंतु विश्वविद्यालय कहां स्थापित होना चाहिए इस प्रश्न पर एकराय नहीं बन पा रही थी।गढ़वाल के निवासी इसे गढ़वाल में एवं कुमाऊं के निवासी इसेनैनीताल या अल्मोड़ा में चाह रहे थे।वर्ष 1970 में डॉ० चटर्जी की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञसमिति विश्वविद्यालय के चयन हेतु पर्वतीय क्षेत्रों के 8 जिलों में गई और अपनी रिपोर्ट में उसने श्रीनगर को ही प्राथमिकता दी।

विश्वविद्यालय आंदोलन में भी उत्तराखंड की महिलाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया।26 जुलाई 1971 को श्रीनगर गढ़वाल एवं कीर्ति नगर में विश्वविद्यालय की मांग को लेकर संपूर्ण बंद रहा।इसी दिनश्रीनगर गढ़वालराजकीय महाविद्यालय के प्रांगण में श्री बैजनाथ तोमर , कैलाश जुगरान,जय सिंह गिरधारी मिस्त्री, रेवतीनंदन बहुगुणा,गोविंदपुरी, शिवचरण,हुकुमचंद, कमल सिंह एवं मुताडीलाल ने अनिश्चितकालकाल के लिए भूख हड़ताल प्रारंभ की।इस भूख हड़ताल में पुरुषों का साथ देने के लिए 30 जुलाई 1971 को पांच महिलाएं भी आमरण अनशन पर बैठ गई। विश्वविद्यालय आंदोलन में महिलाओं की सबसे बड़ी भूमिका यह रही कि उन्होंने अपने खर्चे पर गांव-गांव घूमकर आंदोलन के लिए चंदा एकत्रित किया। तथा बड़ी ईमानदारी से चंदे द्वारा एकत्रित की गईएक-एक पाई (धनराशि)आंदोलन चला रही समिति को सौंप दी।

गढ़वाल मंडल में उत्तराखंड विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए चल रहा आंदोलन दिन-प्रतिदिन प्रचंड रूप धारण करता जा रहा था। गढ़वाल मंडल में जगह-जगहमहिलाओं द्वारा धरना प्रदर्शन , भूख हड़ताल आदि कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे थे। स्थिति को नाजुक होता देख अक्टूबर 1972 कोतत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी,श्रीनगर दौरे पर आई तथा पर्वती य क्षेत्र में गढ़वाल एवं कुमाऊं विश्वविद्यालय खोलने की घोषणा कर डाली। बाद में श्रीनगर एवं पौड़ी में सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने स्पष्ट ऐलान किया कि

गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर मेंही स्थापित किया जाएगा।गढ़वाल विश्वविद्यालय की विधिवत स्थापना 1 दिसंबर 1973 को श्रीनगर गढ़वाल में हुई ।एक बार फिर उत्तराखंड की महिलाओं का संघर्ष सफल हुआ एवं **बी०डीभट्ट** गढ़वाल विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति नियुक्त हुए।

उत्तराखंड की महिलाएंएवंपृथक पर्वतीय राज्यउत्तराखंड आंदोलन:उत्तराखंड आंदोलन की अगर बात करें तो यह आंदोलन पर्वतीय समाज की एक विराट प्रतिक्रिया थी। इसकी पृष्ठभूमि की अगर समीक्षा की जाए तो इस आंदोलन की शुरुआत कुमाऊं से होती है। 1815 की संधि के बाद जब कुमाऊंपरअंग्रेजों का कब्जा हो गयातो उसकी राजनीतिक पहचान लगभग विलुप्त हो चुकी थी।इसके विपरीत गढ़वाल में राजतंत्र व्यवस्था थी जिसके चलते गढ़वाल का अपना अलग अस्तित्व बरकरार रहा। पहचान के संकट से उबरने के लिए धीरे-धीरे कुमाऊं आंदोलित होने लगा और वहां के अभिजात वर्ग (राजपूत, ब्राह्मण) के साथ-साथ कुमाऊनी बनिए, मुसलमानऔर ईसाई भी इस आंदोलन में सम्मिलित हो गए। तत्कालीन मौजूदा परिस्थितियों के चलते यह आंदोलन एक व्यापक जनांदोलन का रूप तो नधर सका परंतु इसके बाद से ही उत्तराखंडमेंपृथकताकीसोच अवश्य पनपने लगी।

उत्तराखंड कीभौगोलिक एवं अन्य विशेषताओं के कारण इसे अलग प्रशासनिक इकाई बनाने का विचार देश की आजादी से पूर्वकई बार उभरा, परन्तुसदैवनिराशाहीहाथलगी।इसी बीच 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भीपृथक उत्तराखंड राज्य की आवाजें संविधान सभा और बाद में भारतीय संसद मेंगूंजती सुनाई देने लगी।परंतु इस आंदोलन में सबसे अहम मोड़ वर्ष 1994 में उत्तराखंड की महिलाओं के कूदने पर आया। उत्तराखंड को अलग राज्य का दर्जा दिलाने में जितना योगदान यहां के पुरुष वर्ग ने दिया उससे कई गुना अधिक योगदान यहां की महिलाओं ने दिया।उत्तराखंड राज्य आंदोलन में महिलाओं की भूमिका आश्चर्यचकित कर देने वाली रही।उत्तराखंड का कोई भी जिला ऐसा नहीं बचा जहां महिलाओं ने इस आंदोलन मेंअपनी सक्रिय भागीदारी ना दिखाई हो।

इस आंदोलन के दौरान घटित मुजफ्फरनगर कांड महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की याद दिलाता है , जिसमेंमहिलाओं को प्रदर्शनसेरोकनेकेलिएबलात्कारजैसेघृणितकृत्यकासहारालियागयाथा।इसआंदोलन के दौरान 02 आंदोलनकारीमहिलाएं हंसाधनाईएवं बेलमती चौहान शहीद हो गईथीं।वह सन 1994 का वर्ष ही था जिसने उत्तराखंड की मातृशक्ति को घर-बार, चूल्हा-चौका छोड़ हाथों में दराती लिएसड़कों पर उतार दिया था। उत्तराखंड आंदोलन की खास बात यह थी कि यह आंदोलन किसी भी दल अथवा विचारधारा से प्रेरित और प्रभावित नहीं था बल्कि यह आंदोलन तो शुद्ध महिलाओं की भावनाओं का नतीजा था जोइसआंदोलन में उनके भाई,बेटे,पिता एवं पति की शहादत के कारण फूट पड़ा था।

उत्तराखंड आंदोलन के दौरान कईमहिलाआंदोलनकारियोंके नाम उभरकर सामने आए जिनकी सामाजिक,राजनीतिक भागीदारी उत्तराखंड के लिए एक मिसाल बन गई।जिसमें स्वर्गीय कौशल्या डबराल , श्रीमती सुशीला बलूनी , श्रीमती द्वारिका बिष्ट , श्रीमती कमलापंत ,श्रीमती धनेश्वरी देवी ,श्रीमती निर्मला बिष्ट , श्रीमती जगदंबा रतूड़ी , श्रीमती शकुंतला गुसाईं , स्वर्गीय शकुंतला मैठानी,श्रीमती कलावती जोशी , श्रीमती यशोदा रावत, श्रीमती उषा नेगी,श्रीमती विमला कोठियाल,श्रीमती विमला नौटियाल, श्रीमती उर्मिला शर्मा, श्रीमती विजया धानी,श्रीमती उमा भट्ट,श्रीमती विजयलक्ष्मी गुसाईं , श्रीमती धनेश्वरी तोमर,श्रीमती उषा नेगी ,श्रीमती शांता राणा आदि अनेक ऐसे महिला नाम आंदोलन के गर्व से उपजे जिनकी ख्यातिउत्तराखंड राज्य आंदोलन में बेहद ही साहसीएवं सार्वजनिक भूमिका के चलते पैदा हुई।उत्तराखंड की महिलाओं ने तब सांस ली जब 9 नवंबर 2000 को पृथक पर्वतीय राज्य उत्तराखंड अस्तित्व में आया गया।अंत में यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि महिला संघर्ष और त्याग सेही पर्वतीय राज्यउत्तराखंडकासृजनसंभवहोपाया।

1- वर्मा ओ०पी:समकालीनभारतीयसमाजकीसामाजिकगतिशीलता,यूनिवर्सिटीपब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1991।
2- सुंद्रियाल,नारायण:उत्तराखंडपर्वतीयराज्य,उत्तराखंडपर्वतीयराज्यपरिषद,दिल्ली।

3- पांडे, साधना:शोषित नारी वर्ग- पर्वतीय क्षेत्र का एक अध्ययन, प्रकाशित शोध, 1992।
4- नौटियाल,शिवानंद:गढ़वाल की वन संपदा और पर्यावरण, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ 1991।
5- नौटियाल,रमेश:रीजनलएक्सप्रेस"वीकलीसमाचारपत्र"पहाड़ोंकीबहनगौरा, 7 अगस्त 2005।
6- गाडगिल,माधव:हगिंग द हिमालयाज , दिचपकोएक्स्पीरियंस,दसौली ग्राम , स्वराज मंडल,गोपेश्वर , 1988।
7- नवजागरण समितिकासंघर्षनामा, 1997,चंबा, टिहरी गढ़वाल।
8- त्रिवेदी,गिरिजाशंकरतथाअग्रवाल,अमिता:महाभारतके वनऔरवृक्ष ,चांदना प्रिंटिंग वर्क्स,देहरादून , 1989।
9- साक्षात्कार:कल्याण सिंह रावत से बृहस्पतिवार 7 अप्रैल 2005 को साक्षात्कार के आधार पर।
10- भट्ट,त्रिलोक चंद्र: उत्तराखंड आंदोलन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
11- भंडारी, राजकुमारी:उत्तराखंड आंदोलन में महिलाओं की भूमिका,अप्रकाशित शोध।